चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक जागरण........

दिनांक 12.11.2020 पृष्ठ संख्या 2 कॉलम 2-8

ज्वार की नई किस्म विकसित, तमिलनाडु, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि के कृषि विज्ञानियों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित की है। ज्वार की इस किस्म को विवि के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। नई किस्म को विवि के विज्ञानियों ने एचएयू में ही विकसित किया है।

इस किस्म को केंद्र के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक एवं अनुमोदन केंद्रीय उप समिति द्वारा अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप महानिदेशक डा. टीआर शर्मा ने की थी।

ज्वार की मीठी, अधिक प्रोटीन और पाचनशीलता वाली किस्म है सीएसवी 44 एफ, दक्षिण भारत के राज्यों के लिए की गई सिफारिश

ज्वार की नई उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ का फाइल फोटो। • विज्ञप्ति

कृषि विश्वविद्यालय के इन विज्ञानियों की मेहनत लाई रंग

विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डा. एके छाबड़ा ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के विज्ञानियों डा. पम्मी कुमारी, डा. सत्यवान आर्य, डा. एसके पाहुजा, डा. एके ठकराल एवं डा. डीएस फौगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डा. सतपाल, डा. जयंती टोकस, डा. हरीश कुमार, डा. विनोद मलिक एवं डा. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है।

सीएसवी 44 एफ में अन्य किस्मों से अधिक मिठास

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. एसके सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से यह पशु के दूध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 फीसद से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सीएसवी 21 एफ से 7.5 फीसद व सीएसवी 30 एफ से 5.8 फीसद हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा। सिफारिश किए गए उचित खाद व सिचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है।

पत्तों पर नहीं लगते रोग

ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। विज्ञानियों के अनुसार चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह उत्तम किस्म है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जोकि ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 प्रतिशत व 5.8 फीसद अधिक है। इस किस्म की सूखे चारे की औसत पैदावार 115 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

प्रदेश के लिए सिफारिश का भेजेंगे प्रपोजल

नई किस्म को विकसित करने वाली टीम सदस्य आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग के अध्यक्ष डा. डीएस फौगाट ने बताया कि इस किस्म को एचएयू में ही विकसित किया गया है, लेकिन कमेटी द्वारा इसकी गुणवत्ता व पैदावार को ध्यान में रखते हुए देश के दक्षिणी राज्यों (तमिलनाडु, महाराष्ट्र और कर्नाटक)में हरे चारे की उत्तम पैदावार के लिए सिफारिश किया गया। इस किस्म को प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर लगाया गया था, जहां इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इसलिए यहां किसानों के लिए भी इसकी सिफारिश संबंधी प्रपोजल जल्द ही कमेटी को भेजा जाएगा। उन्होंने बताया कि चारा अनुभाग 1970 से अब तक ज्वार की कुल आठ किस्में विकसित कर चुका है। इनमें से बहु कटाई वाली किस्म एसएसजी 59-3 (1978), दो कटाई वाली किस्म एचसी 136 (1982) व एक कटाई वाली किस्में एचसी 308 (1996), एचजे 513 (2010) और एचजे 541 (2014) किसानों की पहली पसंद बनी हैं।

अब तक ज्वार की आठ किस्में विकसित कर चुका है एचएयू : कुलपति

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि विज्ञानियों को इस उपलब्धि पर बधाई दी। साथ ही भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि चारा अनुभाग के विज्ञानियों द्वारा विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक ज्वार की आठ किस्में विकसित की जा चुकी हैं, जो अपने आप में बड़ी उपलब्धि है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक भूमि.....

दिनांक 12.11.2020.....पृष्ठ संख्या.....9.....कॉलम.....2-8.....

वैज्ञानिकों न तैयार की किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

तमिलनाडू, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से विकसित की गई ज्वार की नई किस्म

वैज्ञानिकों ने कहा, स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं

मिठास अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा। सिफारिश किए गए उचित खाद व सिंचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है और इसे लवणीय भूमि में भी उगाया जा सकता है। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते।

हिसार। ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाली टीम सदस्य।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एके छाबड़ा ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का विशेष सहयोग रहा है।

लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है।

अब तक ज्वार की आठ किस्में विकसित : कुलपतिः विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक आठ किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक भास्कर.....

दिनांक 12.11.2020.....पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....4-8.....

रिसर्च • एचएयू के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई किस्म विकसित की

ज्वार की नई किस्म सीएसवी 44 एफ, प्रोटीन व पाचनशीलता भी अधिक, मिठास 10% ज्यादा

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है।

पशु के दुग्ध उत्पादन में करती है बढ़ोतरी

ज्वार की नई किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिक कुलपति प्रो समर सिंह के साथ।

विवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग : विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 12.11.2022...पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....6-8.....

तमिलनाडू, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एच.ए.यू. से विकसित ज्वार की नई किस्म सी.एस.वी. 44-एफ

हिसार, 11 नवम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सी.एस.वी. 44-एफ विकसित कर एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है।

इसको भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यत: कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई

ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाली टीम कुलपति के साथ।

है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.ए.यू. में ही विकसित किया है।

विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि सी.एस.वी. 44-एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फौगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है। चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डी.एस. फौगाट ने बताया कि कमेटी द्वारा इसकी गुणवत्ता व पैदावार को ध्यान में रखते हुए अभी देश के दक्षिणी राज्यों (तमिलनाडु, महाराष्ट्र और कर्नाटक) में हरे चारे की उत्तम पैदावार के लिए सिफारिश किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... समर उजाला .....

दिनांक 12.11.2020 पृष्ठ संख्या.....5.....कॉलम.....1-4.....

शोध: मीठी ज्वार खाकर अधिक दूध देंगे पशु

एचएयू के वैज्ञानिकों ने विकसित की ज्वार की सीएसवी 44 एफ किस्म

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ (मीठी ज्वार) विकसित की है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग ने विकसित किया है। इस ज्वार को पशु बड़े चाव से खाएंगे और दूध भी अधिक देंगे। ज्वार की यह किस्म मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए मुफीद मानी गई है।

ज्वार में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है जिससे पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी होगी

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिससे पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी होगी। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसे खाना अधिक पसंद करते हैं।

इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सीएसवी 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सीएसवी 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा। इसे लवणीय भूमि में भी उगाया जा सकता है। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। यह तनाछेदक कीट के प्रति भी प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जो सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है। इस किस्म की सूखे चारे की औसत पैदावार 115 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

किस्म को विकसित करने में इन वैज्ञानिकों का रहा योगदान

विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एके छाबड़ा ने बताया कि डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एनके ठकराल एवं डॉ. डीएस फोगाट की टीम ने यह किस्म तैयार की है। साथ ही डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक व डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है। चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डीएस फोगाट ने बताया कि इसकी गुणवत्ता व पैदावार को ध्यान में रखते हुए अभी देश के दक्षिणी राज्यों में हरे चारे की उत्तम पैदावार के लिए सिफारिश किया गया। हालांकि उन्होंने इस किस्म को हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर लगाया था, जहां इसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इसलिए यहां किसानों के लिए भी इसकी सिफारिश संबंधी प्रस्ताव जल्द ही कमेटी को भेजा जाएगा।

> “ मैं ज्वार की नई किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों को बधाई देता हूं। इससे पहले भी चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा आठ किस्में विकसित की जा चुकी हैं, जो अपने आप में बड़ी उपलब्धि है।
>
> **- प्रो. समर सिंह, कुलपति, एचएयू।**

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Hawk	**12.11.2020**	Online	--

Haryana Agri University developed new Sorghum variety CSV 44F mainly for southern states

The Hawk | 11 Nov 2020 5:07 PM

Chandigarh (The Hawk): Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, Hisar has developed a new improved variety of sorghum CSV 44F.

This newly developed variety is recommended for the southern states mainly Karnataka, Maharashtra and Tamil Nadu. Vice Chancellor of the University, Professor Samar Singh congratulated the scientists for this achievement and called for continuous efforts in future as well. Director of Research, Dr. S.K. Sehrawat highlighted that the CSV 44F variety has 10 percent higher protein content, delicious and also high digestibility than other varieties, due to which it is helpful in increasing the milk production of the animal.

Also Read - **DCs in Haryana ordered to publish draft list of Collector Rates by December 15**

The variety has no lodging problems and most suitable in moderately to high rainfall areas. Naturally poisonous dhurin content is also very less in this variety and is moderate tolerant to stem borer and shoot fly. The average green fodder yield of this variety is 407 q/ha, which is 7.5 percent and 5.8 percent higher than other improved varieties of sorghum CSV 21F and CSV 30F, respectively.

This variety has been developed by the Forage section, the Department of Genetics and Plant Breeding of the university. This variety notified and released by the 'Crop Standards, Notification and Approval Central Sub-Committee' of the Department of Agriculture and Co-operation, Ministry of Agriculture and Farmers Welfare, Government of India. According to Dr. A.K. Chabra, HOD, Genetics and Plant Breeding that this variety is developed by the team of scientists namely Dr. Pammi Kumari, Dr. Satyawan Arya, Dr. S.K. Pahuja, Dr. N.K. Thakral and Dr. D.S. Phogat, Dr. Satpal, Dr. Jayanthi Tokas, Dr. Harish Kumar, Dr. Vinod Malik and Dr. Sarita Devi. (JMT-INF) .

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	**12.11.2020**	——	**--**

तमिलनाडू, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किस्म सीएसवी 44 एफ

हैलो हिसार न्यूज

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यत: कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है। मिठास अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	**12.11.2020**	——	--

तमिलनाडू, महाराष्ट्र और कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की किस्म

● एचएयू वैज्ञानिकों ने ज्वार की मीठी, अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता वाली किस्म की विकसित

हिसार, 11 नवंबर (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यत= कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा। विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है।

ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाली टीम सदस्य।

ज्वार की आठ किस्में विकसित : कुलपति

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक आठ किस्में विकसित की जा चुकी हैं, जो अपने आप में इस क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि है।

प्रदेश के लिए सिफारिश का भेजेंगे प्रपोजल

नई किस्म को विकसित करने वाली टीम सदस्य आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डी.एस. फोगाट ने बताया कि हालांकि इस किस्म को एचएयू में ही विकसित किया गया है, लेकिन कमेटी द्वारा इसकी गुणवत्ता व पैदावार को ध्यान में रखते हुए अभी देश के दक्षिणी राज्यों (तमिलनाडु, महाराष्ट्र और कर्नाटक) में हरे चारे की उत्तम पैदावार के लिए सिफारिश किया गया। इस किस्म को प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर लगाया गया था, जहां इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इसलिए यहां किसानों के लिए भी इसकी सिफारिश संबंधी प्रपोजल जल्द ही कमेटी को भेजा जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर ब्रेकिंग न्यूज	**12.11.2020**	——	--

तमिलनाडु, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किस्म सीएसवी 44 एफ

एचएयू वैज्ञानिकों ने ज्वार की मीठी, अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता वाली किस्म सीएसवी44 एफ विकसित की, दक्षिण भारत के राज्यों के लिए की गई सिफारिश

एचआर ब्रेकिंग न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है।

ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाली टीम सदस्य।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग : *विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. उकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सातपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है।*

प्रदेश के लिए सिफारिश का भेजेंगे प्रयोजन : *नई किस्म को विकसित करने वाली टीम सदस्य अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डी.एस. फोगाट ने बताया कि हालांकि इस किस्म को एचएयू में ही विकसित किया गया है, लेकिन कमेटी द्वारा इसकी गुणवत्ता व पैदावार को ध्यान में रखते हुए अभी देश के दक्षिणी राज्यों (तमिलनाडु, महाराष्ट्र और कर्नाटक) में हरे चारे की उत्तम पैदावार के लिए सिफारिश किया गया। इस किस्म को प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर लगाया गया था, जहां इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इसलिए यहां किसानों के लिए भी इसकी सिफारिश संबंधी प्रोजल जल्द ही कमेटी को भेजा जाएगा। उन्होंने बताया कि चारा अनुभाग 1970 से अब तक ज्वार की कुल आठ किस्में विकसित कर चुका है। इनमें से बहु कटाई वाली किस्म एस.एस.जी. 59-3 (1978), दो कटाई वाली किस्म एच.सी. 136 (1982) व एक कटाई वाली किस्में एच.सी. 308 (1996), एच.जे. 513 (2010) और एच.जे. 541 (2014) किसानों की पहली पसंद बनी है।*

अब तक ज्वार की आठ किस्में विकसित कर चुका है एचएयू : कुलपति प्रोफेसर समर सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक आठ किस्में विकसित की जा चुकी है, जो अपने आप में इस क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि है।

मिठास अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक : विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है।

इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा। सिफारिश किए गए उचित खाद व सिचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है और इसे लवणीय भूमि में भी उगाया जा सकता है। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते।

वैज्ञानिकों के अनुसार चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। जोकि ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है। इस किस्म की सूखे चारे की औसत पैदावार 115 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है जोकि पूर्व में विकसित उन्नत किस्मों से अधिक है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	**12.11.2020**	——	--

कृषि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के कृषि वैज्ञानिकों ने की विकसित

ज्वार की उन्नत किस्म 'सीएसवी 44 एफ' ईजाद

■ नई किस्म में प्रोटीन व पाचनशीलता है अधिक

हिसार (सच कहूँ न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के कृषि वैज्ञानिकों ने पशुओं के चारे की फसल ज्वार की नई व उन्नत किस्म 'सीएसवी 44 एफ' विकसित कर विश्वविद्यालय के नाम एक और उपलब्धि दर्ज करवा दी है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि 'सीएसवी 44 एफ' किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से यह पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोत्तरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसे खाना काफी पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म 'सीएसवी 21 एफ' से 7.5 प्रतिशत व 'सीएसवी 30 एफ' से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा भी होगा।

इस किस्म को प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर लगाया गया था, जहां इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इसलिए यहां किसानों के लिए भी इसकी सिफारिश संबंधी प्रपोजल जल्द ही कमेटी को भेजा जाएगा। उन्होंने बताया कि चारा अनुभाग 1970 से अब तक ज्वार की कुल आठ किस्में विकसित कर चुका है। इनमें से बहु-कटाई वाली किस्म एसएसजी 59-3 (1978), दो कटाई वाली किस्म एचसी 136 (1982) व एक कटाई वाली किस्में एचसी 308 (1996), एचजे 513 (2010) और एचजे 541 (2014) किसानों की पहली पसंद बनी हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	**11.11.2020**	——	--

तमिलनाडू, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किस्म सीएसवी 44 एफ

एचएयू वैज्ञानिकों ने ज्वार की मीठी, अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता वाली किस्म सीएसवी44 एफ विकसित की, दक्षिण भारत के राज्यों के लिए की गई सिफारिश

टूडे न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्यादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा। सिफारिश किए गए उचित खाद व सिचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है और इसे लवणीय भूमि में भी उगाया जा सकता है। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। वैज्ञानिकों के अनुसार चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। जोकि ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है। इस किस्म की सूखे चारे की औसत पैदावार 115 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है जोकि पूर्व में विकसित उन्नत किस्मों से अधिक है।

ज्वार की नई उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ का फाइल फोटो। ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाली टीम सदस्य।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एल.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है।

प्रदेश के लिए सिफारिश का भेजेंगे प्रपोजल

नई किस्म को विकसित करने वाली टीम सदस्य आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डी.एस. फोगाट ने बताया कि हालांकि इस किस्म को एचएयू में ही विकसित किया गया है, लेकिन कमेटी द्वारा इसकी गुणवत्ता व पैदावार को ध्यान में रखते हुए अभी देश के दक्षिणी राज्यों (तमिलनाडु, महाराष्ट्र और कर्नाटक)में हरे चारे की उत्तम पैदावार के लिए सिफारिश किया गया। इस किस्म को प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर लगाया गया था, जहां इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इसलिए यहां किसानों के लिए भी इसकी सिफारिश संबंधी प्रपोजल जल्द ही कमेटी को भेजा जाएगा। उन्होंने बताया कि चारा अनुभाग 1970 से अब तक ज्वार की कुल आठ किस्में विकसित कर चुका है। इनमें से बहु कटाई वाली किस्म एस.एस.जी. 59-3 (1978), दो कटाई वाली किस्म एच.सी. 136 (1982) व एक कटाई वाली किस्में एच.सी. 308 (1996), एच.जे. 513 (2010) और एच.जे. 541 (2014) किसानों की पहली पसंद बनी हैं।

अब तक ज्वार की आठ किस्में विकसित कर चुका है एचएयू

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक आठ किस्में विकसित की जा चुकी हैं, जो अपने आप में इस क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	**12.11.2020**	——	--

तमिलनाडू, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किस्म सीएसवी 44 एफ

वाटिका@हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की ह्यफसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।

बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की

गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है। मिठास अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस. के. सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी. एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा। सिफारिश किए गए उचित खाद व सिचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है और इसे लवणीय भूमि में भी उगाया जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जगमार्ग	**11.11.2020**	——	--

खोज **एचएयू वैज्ञानिकों ने ज्वार की मीठी, अधिक प्रोटीन वाली किस्म विकसित की**

तमिलनाडु, महाराष्ट्र और कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किस्म सीएसवी 44 एफ

राजेश्वर बैनीवाल

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है।

-जगमार्ग

ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यत: कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है।

मिठास अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा। सिफारिश किए गए उचित खाद व सिंचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है और इसे लवणीय भूमि में भी उगाया जा सकता है। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। वैज्ञानिकों के अनुसार चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**11.11.2020**	——	--

एचएयू वैज्ञानिकों ने ज्वार की सीएसवी44 एफ किस्म विकसित की, दक्षिण भारत के राज्यों के लिए की गई सिफारिश

तमिलनाडू, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किस्म सीएसवी 44 एफ

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है।

मिठास अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा। सिफारिश किए गए उचित खाद व सिचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है और इसे लवणीय भूमि में भी उगाया जा सकता है। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। वैज्ञानिकों के अनुसार चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। जोकि ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है। इस किस्म की सूखे चारे की औसत पैदावार 115 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है जोकि पूर्व में विकसित उन्नत किस्मों से अधिक है।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एनके ठकराल एवं डॉ. डीएस फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है।

प्रदेश के लिए सिफारिश का भेजेंगे प्रपोजल

नई किस्म को विकसित करने वाली टीम सदस्य आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डी.एस. फोगाट ने बताया कि हालांकि इस किस्म को एचएयू में ही विकसित किया गया है, लेकिन कमेटी द्वारा इसकी गुणवत्ता व पैदावार को ध्यान में रखते हुए अभी देश के दक्षिणी राज्यों (तमिलनाडु, महाराष्ट्र और कर्नाटक)में हरे चारे की उत्तम पैदावार के लिए सिफारिश किया गया। इस किस्म को प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर लगाया गया था, जहां इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इसलिए यहां किसानों के लिए भी इसकी सिफारिश संबंधी प्रपोजल जल्द ही कमेटी को भेजा जाएगा। उन्होंने बताया कि चारा अनुभाग 1970 से अब तक ज्वार की कुल आठ किस्में विकसित कर चुका है। इनमें से बहु कटाई वाली किस्म एस.एस.जी. 59-3 (1978), दो कटाई वाली किस्म एच.सी. 136 (1982) व एक कटाई वाली किस्में एच.सी. 308 (1996), एच.जे. 513 (2010) और एच.जे. 541 (2014) किसानों की पहली पसंद बनी हैं।अब तक ज्वार की आठ किस्में विकसित कर चुका है

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	**11.11.2020**	——	--

तमिलनाडू, महाराष्ट्र, व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किस्म सीएसवी-44 एफ

एचएयू वैज्ञानिकों ने ज्वार की मीठी, अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता वाली किस्म सीएसवी44 एफ विकसित की, दक्षिण भारत के राज्यों के लिए की गई सिफारिश

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया

है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यत: कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है।

अब तक ज्वार की आठ किस्में विकसित कर चुका है एचएयू : वीसी

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक आठ किस्में विकसित की जा चुकी हैं, जो अपने आप में इस क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि है।

मिठास अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	**11.11.2020**	——	--

तमिलनाडु, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किस्म

एचएयू वैज्ञानिकों ने ज्वार की मीठी, अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता वाली किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित की

अन्य किस्मों से अधिक मिठास

ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाली टीम के सदस्यों के साथ कुलपति प्रो. समर सिंह। (छाया : राज पराशर)

हिसार, 11 नवम्बर (राज पराशर): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केन्द्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डा. टीआर शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यत : कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. एस.के. सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सीएसवी 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सीएसवी 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। वैज्ञानिकों के अनुसार चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। जोकि ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमश: 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है। इस किस्म की सूखे चारे की औसत पैदावार 115 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है जोकि पूर्व में विकसित उन्नत किस्मों से अधिक है। विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डा. एके. छाबड़ा ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डा. पम्मी कुमारी, डा. सत्यवान आर्य, डा. एस.के. पाहुजा, डा. एन.के. ठकराल एवं डा. डीएस फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डा. सतपाल, डा. जयंती टोकस, डा. हरीश कुमार, डा. विनोद मलिक एवं डा. सविता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी।

Activate Windows
Go to Settings to activate Windows.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**11.11.2020**	——	--

एचएयू के वैज्ञानिकों ने ज्वार की मीठी, अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता वाली किस्म सीएसवी44 एफ विकसित की

तमिलनाडू, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किस्म सीएसवी 44 एफ

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है।

हिसार। ज्वार की नई उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ का फाइल फोटो। ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाली टीम सदस्य।

मिठास अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा। सिफारिश किए गए उचित खाद व सिचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है और इसे लवणीय भूमि में भी उगाया जा सकता है। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। वैज्ञानिकों के अनुसार चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। जोकि ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है। इस किस्म की सूखे चारे की औसत पैदावार 115 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है जोकि पूर्व में विकसित उन्नत किस्मों से अधिक है।

प्रदेश के लिए सिफारिश का भेजेंगे प्रपोजल

नई किस्म को विकसित करने वाली टीम सदस्य आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डी.एस. फोगाट ने बताया कि हालांकि इस किस्म को एचएयू में ही विकसित किया गया है, लेकिन कमेटी द्वारा इसकी गुणवत्ता व पैदावार को ध्यान में रखते हुए अभी देश के दक्षिणी राज्यों (तमिलनाडु, महाराष्ट्र और कर्नाटक)में हरे चारे की उत्तम पैदावार के लिए सिफारिश किया गया। इस किस्म को प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर लगाया गया था, जहां इसके बहुत ही को भेजा जाएगा। उन्होंने बताया कि चारा अनुभाग 1970 से अब तक ज्वार की कुल आठ किस्में विकसित कर चुका है। इनमें से बहु कटाई वाली किस्म एस.एस.जी. 59-3 (1978), दो कटाई वाली किस्म एच.सी. 136 (1982) व एक कटाई वाली किस्में एच.सी. 308 (1996), एच.जे. 513 (2010) और एच.जे. 541 (2014) किसानों की पहली पसंद बनी हैं।

अब तक ज्वार की आठ किस्में विकसित कर चुका है एचएयू : कुलपति

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक आठ किस्में विकसित की जा चुकी है, जो अपने आप में इस क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि है।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उत्तम हिन्दू	**11.11.2020**	——	--

कृषि वैज्ञानिकों ने की पशु चारे की ज्वार की नई किस्म विकसित

हिसार/प्रवीम कुमार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,हिसार के कृषि वैज्ञानिकों ने पशुओं के चारे की फसल ज्वार की नई व उन्नत किस्म 'सीएसवी 44 एफ' विकसित कर विश्वविद्यालय के नाम एक और उपलब्धि दर्ज करवा दी है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस

'सीएसवी 44 एफ' विकसित होने से विश्वविद्यालय के नाम एक और उपलब्धि दर्ज

किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि 'सीएसवी 44 एफ' किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से यह पशु के दुग्ध उत्पादन में वृद्धि करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसे खाना काफी पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म 'सीएसवी 21 एफ' से 7.5 प्रतिशत व 'सीएसवी 30 एफ' से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा भी होगा। विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि 'सीएसवी 44 एफ' किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**11.11.2020**	——	--

तमिलनाडू, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किस्म सीएसवी 44 एफ

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 11 नवम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया

है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यत: कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है। विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आहवान किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 12.11.2020 पृष्ठ संख्या 4 कॉलम 1-4

सलाह • गेहूं की अधिक पैदावार के लिए खुद भी बीज तैयार कर सकते हैं किसान

अधिक पैदावार के लिए गेंहू की डब्ल्यूएच 1184 किस्म करें इस्तेमाल, प्रति एकड़ 25 क्विंटल तक पाएं पैदावार

• एचएयू के वैज्ञानिक बोले- बीज तैयार करते समय विशेष सावधानी रखें किसान

महबूब अली | हिसार

एचएयू के अनुवांशिक एवं पौध प्रजनन विभाग के वैज्ञानिकों ने गेंहू की डब्ल्यूएच 1184 किस्म विकसित की है, जिसमें प्रति एकड़ जहां 25 क्विंटल तक पैदावार ली जा सकेगी। वहीं इस वैरायटी में बीमारी नहीं होगी। यहीं नहीं यह प्रोटीन से भी भरपूर है। इसके अलावा एचएयू के वैज्ञानिक किसानों को गेंहू की दूसरी वैरायटी एचडी 3086 और डब्ल्यूएच 1105 भी उगाने की अपील कर रहे है। इन दोनों किस्मों में बीमारी नाममात्र ही लग पाती है।

एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व डॉ. विक्रम सिंह ने बताया कि गेहूं की ज़्यादा पैदावार लेने के लिए शुद्ध बीज का होना बहुत जरुरी है, लेकिन किसानों को या तो शुद्ध बीज प्राप्त नहीं होता या इसके लिए बहुत समय व धन खर्च करना पड़ता है। इन परेशानियों से बचने के लिए किसान एक बार किसी प्रमाणित संस्था जैसे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, राज्य बीज विकास निगम व राष्ट्रीय बीज निगम आदि से शुद्ध बीज खरीद कर उसी से अपने खेत में खुद बीज तैयार करके उसकी शुद्धता को कई सालों तक कायम रख सकते हैं।

किसान कुछ खास बातों का रखें ध्यान

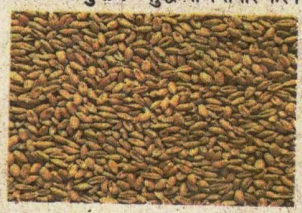

खेत का चुनाव: शुद्ध बीज तैयार करने के लिऐ ऐसा खेत चुनना चाहिए जिसकी जमीन उपजाऊ हो व सिंचाई की समुचित व्यवस्था हो। उस खेत में दूसरी फसलों के पौधे व खरपतवार न हो।

बीज उपचार: बीज यदि पहले से उपचारित नहीं हों तो 2 ग्रा. वीटावैक्स प्रति किग्रा. बीज की दर से मिलाएं ताकि खुली कंगियारी बीमारी की रोकथाम हो सके।

बिजाई का तरीका: शुद्ध बीज तैयार करने के लिए इसकी बीजाई समय पर व कतारों में करनी चाहिए जिससे गैर पौधे निकलने का काम आसानी से किया जा सके। खेत में खाद-पानी किस्म के अनुसार दिया जाए व फसल के गिरने का ध्यान रखें।

फसल की छंटाई: शुद्ध बीज तैयार करने के लिए छंटाई महत्तवपूर्ण है। शुद्ध बीज वाली फसल में किसी अन्य किस्म का पौधा या खरपतवार हो तो उसको निकाल देना चाहिए। खुली कंगियारी से प्रभावित पौधों को थैले से ढक कर सावधानी पूर्वक निकाल कर खेत से दूर मिटटी में दबा दें।

कटाई व मढ़ाई: अगर खेत आसपास अन्य किस्मों की बिजाई नहीं की गई है तो खेत को काट लेना चाहिए, यदि नहीं की गई तो खेत के उस ओर से 3 मी. चौड़ी पट्टी फसल काट कर अलग से साफ मशीन से मढ़ाई कर लेनी चाहिए।

बीज रखाव: इस बीज को झारने से छान लें ताकि खरपतवारों के बीज व छोटे सिकुड़े हुए दाने नीचे रह जाएं। मोटे दानों में अगर कोई दूसरी तरह का दाना दिखाई दे तो उसको भी निकाल देना चाहिए।

नमीयुक्त और भूरभूरी मिट्टी में की करें गेहूं की बिजाई

राकेश कुमार | गढ़ी बीरबल

गेहूं हरियाणा की एक मुख्य आनाज की फसल है। इसकी बिजाई के लिए विभिन्न कारकों में भूमि की तैयारी एवं खाद का प्रबंधन एक मुख्य कारक है जो गेहूं की फसल को बढ़ाता है। अभी तक कुछ दिनों में जिन किसानों ने गेहूं की बिजाई करनी है इसके लिए विस्तार से जानकारी देते हुए पूर्व प्रधान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय ने कहा कि गेहूं की अच्छी फसल लेने के लिए खेत में अच्छी नमी और मिट्टी भूरभरी होनी चाहिए। सिंचित भूमियों में पहली जुताई मिट्टी पलट हल से करके बाद में तीन-चार जुताई हैरों से करें और बाद में सुहागा लगाएं। भूमि अगर समतल नहीं है तो लेंडलैवलर से भूमि का समतल करें।

खाद व उर्वरकों का प्रयोग : अगर गेहूं की देसी किस्म सिंचित इलाकों में लगाई है तो सामान्य तौर पर इसके लिए 24 किलो नाइट्रोजन 52 किलो यूरिया, 12 किलो फास्फोरस 75 किलो सिंगल सुपर फास्फेट व 6 किलो पोटाश (10 किलो मुरेट आफ पोटाश, 10 किलो जिंक सल्फेट प्रति एकड़ की सिफारिश है। पोटाश की मात्रा 12 किलो, 20 किलो मुरेट आफ पोटाश का प्रयोग करें।